कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन

कुशाग्र जैन*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कला के मूल्यांकन में सहायक होते हैं, बल्कि कला के विकास, प्रचार और समाज में उसकी स्वीकार्यता में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। इस शोधपत्र का उद्देश्य समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन करना है।

महत्वपूर्ण शब्द (Keywords) - समकालीन भारतीय कला, कला समीक्षा, कला समीक्षक, सांस्कृतिक विमर्श, आलोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

समकालीन भारतीय कला का परिदृश्य बहुआयामी, जटिल और विविधता से परिपूर्ण है। आज़ादी के बाद भारत में जिस प्रकार राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की बयार बहनी शुरू हुई, उसी गति से कला के क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव दृष्टिगोचर हुए। इस बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में कला समीक्षक एक सेतु के रूप में उभरे हैं–कलाकार, कृति और समाज के मध्य संवाद स्थापित करते हुए। वे न केवल कला को देखने और समझने की दृष्टि प्रदान करते हैं, बल्कि उसे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सन्दर्भों में स्थान देने का कार्य भी करते हैं। यह शोधपत्र समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख योगदान, समकालीन चुनौतियाँ और संभावनाओं का विवेचन किया गया है।

1. समकालीन भारतीय कला का परिप्रेक्ष्य भारत में समकालीन कला की शुरुआत बीसवीं सदी के मध्य में उस समय हुई, जब देश नवजागरण और स्वतंत्रता के आंदोलनों के प्रभाव से गुज़र रहा था। यह वह समय था जब कलाकारों ने पारंपरिक रूपों से बाहर निकलकर व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सामाजिक यथार्थ और वैश्विक कलात्मक प्रवृत्तियों की ओर रुख किया। इस दौर में प्रगतिशील कलाकार समूह (Progressive Artists' Group) की स्थापना, ललित कला अकादमी की भूमिका, और भारतीय आधुनिकता का विमर्श अहम रहे।

समकालीन कला न केवल शिल्प और शैली में नवीनता लाती है, बल्कि वह विचार और विमर्श के स्तर पर भी नए प्रश्न उठाती है–जैसे पहचान, पितृसत्ता, उपनिवेशवाद, पर्यावरण, और बहुसंस्कृतिवाद। इन सबका विश्लेषण करने और उसे दर्शकों तक अर्थपूर्ण रूप में पहुँचाने का कार्य एक सजग कला समीक्षक ही कर सकता है।

ऐसे परिवेश में रिचर्ड बार्थोलोम्यू, आनंद के. कुमारस्वामी, गीता कपूर, केशव मलिक, जे. स्वामीनाथन, यशोधरा डालमिया जैसे समीक्षकों ने न केवल कलाओं की समीक्षा की, बल्कि उनके पीछे छिपे ऐतिहासिक, दार्शनिक और सामाजिक आयामों को भी उद्घाटित किया।

कला समीक्षकों की भूमिका

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कृतियों का विश्लेषण करते हैं, बल्कि उनके संदर्भ, महत्व, और प्रभाव को भी स्पष्ट करते हैं। इस प्रक्रिया में वे कलाकार, दर्शक, गैलरी, अकादमिक जगत और समाज के मध्य एक विचारशील मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं।

2.1 कला के मूल्यांकन में

कला समीक्षक किसी भी कृति को केवल दृश्य रूप में नहीं देखते, वे उसके भीतर अंतर्निहित प्रतीकों, तकनीकी पहलुओं, विषय-वस्तु, और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संदर्भों की परतों को उघाड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप, अगर एक चित्र में लोक तत्वों का प्रयोग हुआ है, तो समीक्षक उस चित्र को केवल एक रूप या शैली के स्तर पर नहीं देखता, बल्कि यह भी जानने की कोशिश करता है कि उस लोक प्रतीक का समकालीन अर्थ क्या है। इस प्रकार समीक्षक दर्शकों को केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि वैचारिक गहराई का अनुभव भी कराता है।

गीता कपूर के लेखन में यह गुणवत्ता स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने भारतीय कला को वैश्विक संदर्भ में देखते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित किया और उसके भीतर के सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों को भी उभारा। उनकी समीक्षा न केवल व्याख्यात्मक होती है, बल्कि वह विचारोत्तेजक भी होती है, जिससे पाठक की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होती है।

2.2 कला के प्रचार में

आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में, जहाँ कला का उत्पादन और उपभोग दोनों बदल रहे हैं, कला समीक्षक कला के प्रचारक भी बन गए हैं। वे कृतियों की समीक्षा को पत्र-पत्रिकाओं, जर्नल्स, ब्लॉग्स, ऑनलाइन पोर्टल्स और सोशल मीडिया पर साझा करते हैं, जिससे कला व्यापक समुदाय तक पहुँचती है।

केशव मलिक की लेखनी, जो दशकों तक अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रही, इस भूमिका का अच्छा उदाहरण है। उनकी समीक्षाओं ने नई पीढ़ी के कलाकारों को मंच प्रदान किया, साथ ही दर्शकों को उनके कार्यों की गहराई से समझ दी।

2.3 कला के विकास में

कला समीक्षक न केवल वर्तमान प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हैं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं को भी इंगित करते हैं। वे यह पहचानते हैं कि कौन से कलाकार नवीन प्रयोग कर रहे हैं, किस कृति में नवाचार की संभावना है, और किन विषयों पर समकालीन कलाकार गंभीर विमर्श कर रहे हैं।

समीक्षक कलाकारों को न केवल आलोचना द्वारा परिष्कृत करते हैं, बल्कि उन्हें वैचारिक आधार और आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित करते हैं। इस संदर्भ में जे. स्वामीनाथन की भूमिका स्मरणीय है, जिन्होंने न केवल स्वयं कला में गहन कार्य किया, बल्कि समीक्षा के माध्यम से जनजातीय और लोक कलाकारों के सृजन को भी समकालीन विमर्श में शामिल किया।

3. समकालीन कला समीक्षकों की चुनौतियाँ

यद्यपि समकालीन भारतीय कला समीक्षकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, फिर भी उन्हें अनेक जटिल और यथार्थवादी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ केवल कार्यक्षेत्र की सीमाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भाषायी, आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी स्तर पर भी दृष्टिगोचर होती हैं।

3.1 भाषायी असमानता और पहुँच की समस्या

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

भारतीय कला आलोचना का एक बड़ा हिस्सा अंग्रेज़ी भाषा में केंद्रित रहा है, जिससे गैर-अंग्रेज़ी भाषी कलाकारों और दर्शकों तक समीक्षा की पहुँच सीमित हो जाती है। हिन्दी, बंगला, मराठी, तमिल, और अन्य भारतीय भाषाओं में समीक्षकों की संख्या कम है, और उनके लेखन को वैसी प्रतिष्ठा या मंच नहीं मिल पाता। इस कारण भारत की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक कलाजगत की विविधता समीक्षा में समुचित रूप से नहीं आ पाती।

3.2 बाजारवाद और गैलरी संस्कृति का प्रभाव

आजकल कला बाजार के बढ़ते प्रभाव ने समीक्षकों की स्वतंत्रता को प्रभावित किया है। कई बार समीक्षाएँ प्रायोजित या पक्षपातपूर्ण हो जाती हैं, जिससे समीक्षा की विश्वसनीयता और आलोचनात्मक गहराई कम होती है। गैलरी, संग्रहकर्ता और आयोजक समीक्षकों पर अप्रत्यक्ष दबाव डालते हैं कि वे केवल सकारात्मक टिप्पणियाँ करें, जिससे वस्तुनिष्ठ आलोचना की गुंजाइश सीमित हो जाती है।

3.3 डिजिटल माध्यम और तात्कालिकता का दबाव

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों पर कला समीक्षा त्वरित, सतही और प्रतिक्रियात्मक होती जा रही है। 'लाइक्स', 'शेयर' और 'फॉलोअर्स' की संस्कृति ने गंभीर आलोचना को हाशिये पर धकेल दिया है। परिणामस्वरूप, युवा समीक्षक गहन अध्ययन और आलोचनात्मक पद्धतियों से दूर होते जा रहे हैं।

3.4 अकादमिक प्रशिक्षण और शोध की कमी

भारत में कला समीक्षा को एक अकादमिक अनुशासन के रूप में अभी तक पूर्ण मान्यता नहीं मिली है। विश्वविद्यालयों में कला आलोचना पर केंद्रित पाठ्यक्रम या शोध परियोजनाओं की संख्या नगण्य है। इससे समीक्षकों की एक नई पीढ़ी तैयार करने में कठिनाई आती है और आलोचना का स्तर प्रायः अनुभवजन्य सीमाओं में ही सिमटा रहता है।

निष्कर्ष

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका केवल एक निरीक्षक की नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, संरक्षक और विचारक की है। वे न केवल कलाकृतियों की व्याख्या करते हैं, बल्कि कला के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों को भी सामने लाते हैं। उनकी समीक्षाएँ दर्शकों को केवल जानकारी नहीं देतीं, बल्कि उन्हें एक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जिससे वे कला को एक सजीव और संवेदनशील अनुभव के रूप में ग्रहण कर सकें।

भले ही समीक्षकों को भाषायी सीमाओं, बाजारवाद, डिजिटल तात्कालिकता और अकादमिक अभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी उनका कार्य भारतीय कला को समृद्ध और जीवंत बनाए रखने में अविस्मरणीय योगदान देता है। भविष्य में यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो कला समीक्षा और अधिक प्रभावशाली, समावेशी और जनोन्मुख हो सकती है।

5. संदर्भ

1. लोढा, स्वाति, और राठौड़, मदन सिंह. "समसामयिक कला प्रवृत्तियाँ और कला समीक्षा." Apni Maati, 2024.

2. "भारतीय कला जगत की समीक्षा." Samta Marg, 2024.

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

3. राठी, डॉ. नीलम. "समकालीन हिन्दी आलोचना का परिदृश्य." ResearchGate, नवम्बर 2023.

4. Kapoor, Geeta. "When was Modernism: Essays on Contemporary Cultural Practice in India." Tulika Books, 2000.

5. Bartholomew, Richard. "The Art Critic: Writings from the Margins, 1953-87." Tulika Books, 2012.

6. Dalmia, Yashodhara. "Indian Contemporary Art: Post Independence Era." Marg Publications, 2019.

7. Swaminathan, J. "The Perceiving Fingers." Lalit Kala Akademi, 1977.